अध्याय 11
प्रशासनिक विकास
(Administrative Development)

सुदृढ़ एवं सक्षम प्रशासन हेतु प्रशासनिक विकास आवश्यक घटक है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् विश्व के बहुत से देशों में प्रशासन की कार्य कुशलता में सुधार करने हेतु निश्चयात्मक, व्यवस्थित एवं संगठित प्रयास किए जा रहे हैं। विगत अध्याय में आपने पढ़ा कि योजना एवं परियोजनाओं के माध्यम से जो व्यवस्था विकास करती है उसे विकास प्रशासन कहते है।

विकास हेतु संलग्न प्रशासनिक इकाईयाँ एवं कार्मिक ही विकास प्रशासन कहलाते है, एवं टिकाऊ, समयानुकूल व प्रभावशाली विकास हेतु सक्षम प्रशासनिक कार्यकारिणी की आवश्यकता है, अतः विकास कार्य में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों का व्यवस्थित विकास अत्यधिक आवश्यक हैं , यही प्रशासनिक विकास कहलाता है। व्यवहार में प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन का ही भाग है, क्योंकि विकास प्रशासन की सफलता विकसित प्रशासनिक तंत्र पर ही निर्भर है। उदाहरण के लिए विद्यालय में कार्यरत समस्त स्टाफ विकास प्रशासन का भाग है क्योंकि ये विद्यार्थियों को पढ़ाकर उनके विकास के साथ राष्ट्रीय विकास के कार्य में लगे हुए है, एवं इन शिक्षकों के दक्ष एवं प्रशिक्षित होने से विद्यार्थियों को अधिक ज्ञान प्राप्त होगा तो ऐसे दक्ष एवं प्रशिक्षित शिक्षक प्रशासनिक विकास के अंग बन जाते है। अतः विकास हेतु इसे प्राप्त करने वाले प्रशासनिक तंत्र का विकास करना विकास प्रशासन कहलाता है।

अवधारणा :

विकास प्रशासन शब्द को दो परस्पर सम्बन्धित अर्थो में प्रयुक्त जाता है।

1. यह विकास कार्यक्रमों के प्रशासन तथा बड़े संगठनों, विशेषतया सरकारी संगठनों द्वारा प्रयोग में लाई विधियों तथा उनके वैकासिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निर्मित नीतियों और योजनाओं के कार्यान्वयन का उल्लेख करता है। (अर्थात् विकास प्रशासन)
2. इसमें प्रशासनिक तंत्र की क्षमताओं को सुदृढ़ करने का भाव सम्मिलित रहता है। (अर्थात प्रशासनिक विकास)

प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन का एक आवश्यक अंग है। यह विकासशील राष्ट्रों में चलाए जा रहे व्यापक विकास कार्यों का ही एक भाग है जो इस मान्यता पर आधारित है कि विकास कार्यकुशलता, क्षमता तथा प्रक्रियाओं को इस ढंग से विकसित किया जाए कि वे अधिक प्रभावी रूप में योगदान दे सकें। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में केवल भौतिकवाद का ही प्रसार नहीं होता है बल्कि यह विकासशील समाजों के मूल्यों, संरचनाओं तथा कार्यप्रणालियों में मौलिक परिवर्तन में भी अगुवा है। आधुनिकीकरण, सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों में अधिकाधिक विवेक के प्रयोग से सम्बन्धित प्रक्रिया का नाम है। विकास तथा आधुनिकीकरण की ये प्रक्रियाए समाज की सभी व्यवस्थाओं को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करती है । विकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार की व्यवस्थाओं में प्रशासनिक तंत्र परिवर्तन का एक सशक्त अस्त्र बन चुका है। अतः यह आवश्यक है कि यह अस्त्र भी पर्याप्त धारदार एवं विकसित हो। किन्तु विडम्बना यह है कि इन देशों का प्रशासन ही सर्वाधिक उपेक्षित, अकुशल तथा निष्प्रभावी बना हुआ है।

प्रशासनिक विकास की आवश्यकता :

प्रशासनिक विकास की आवश्यकता के अग्रलिखित कारण है :

1. विकासशील देशों का प्रशासन पश्चिमी राष्ट्रों की विरासत का पर्याय है अथवा इन देशों का लोक प्रशासन पश्चिमी देशों के ढांचे के अनुरूप बनाया गया है । विकासशील देशों का प्रशासन स्वदेशी न होकर पाश्चात्य देशों की नकल होने के कारण सम्बन्धित विकासशील

   देश की सामाजिक व्यवस्था से मेल नहीं खाता है अतः यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसा प्रशासन उस देश की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जाए।
2. विकास प्रशासन की सफलता का आधार प्रशासनिक कुशलता है तथा प्रशासनिक कुशलता प्रशासनिक विकास का मुख्य चिन्तन बिन्दु है। यदि विकास प्रशासन को लक्ष्योन्मुखी तथा कार्योन्मुखी सिद्ध होना है, तो प्रशासनिक विकास आवश्यक है।
3. विकासशील देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाएं, राजनीतिक स्वतंत्रता से पूर्व नियामकीय प्रकृति की रही है जिनमें विकास के प्रति अनिच्छा तथा अक्षमता दोनों व्याप्त है। साथ में इन देशों के लोक सेवकों की मानव संसाधन क्षमताएँ भी उत्कृष्ट श्रेणी की नहीं है अतः सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार आवश्यक प्रतीत होता है।
4. सम्पूर्ण विकास प्रशासन की सफलता प्रशासनिक विकास पर निर्भर करती है अतः प्रशासनिक विकास पर गंभीरता से अध्ययन उपयोगी है। प्रशासन का समुचित विकास हुए बिना विकास प्रशासन की सफलता संदिग्ध है।

अर्थ एवं परिभाषाएँ :

नवीन मान्यताओं तथा विकासोन्मुख लक्ष्यों के परिणाम स्वरूप प्रशासनिक संरचनाओं तथा प्रक्रियाओं में किए जाने

वाले सुनियोजित परिवर्तनों को प्रशासनिक विकास कहते है।

फेड़ रिग्ज़ के अनुसार: प्रशासनिक विकास निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध साधनों को उपयोग करने की बढ़ती हुई प्रभावशीलता का प्रतिमान है।

जे.एन. खोसला के शब्दों में : नौकरशाही की नीतियों, कार्यक्रमों, क्रियाविधियों, कार्य पद्धतियों, संगठनात्मक संरचनाओं, तथा भर्ती प्रतिमानों, विभिन्न प्रकार के विकास, सेवीवर्ग तथा प्रशासन के ग्राहकों के साथ सम्बन्ध प्रतिमानों की संख्या एवं विशेषताओं में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के सुधार प्रशासनिक विकास का पयार्य है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रशासनिक विकास :

1. विकास प्रशासन का एक अभिन्न अंग है।
2. प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार तथा विकास को महत्व देता है। जिससे विकास प्रशासन के लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रशासनिक व्यवस्था सार्थक भूमिका निभा सकें।
3. प्रशासन की परम्परागत प्रक्रियाओं, पद्धतियों, नियमों तथा मापदंड़ों में समयानुकूल विकास का हिमायती है।
4. प्रशासनिक क्षमता एवं कुशलता में वृद्धि करना चाहता है।
5. इस मान्यता पर आधारित है कि कोई भी प्रशासनिक व्यवस्था तभी प्रभावशाली एवं गतिशील रह सकती है, जब तक की समयानुकूल परिवर्तन एवं सुधार होते रहें। प्रशासनिक विकास का प्रथम साधन प्रशासनिक सुधार है। प्रशासनिक सुधार वे सुनियोजित प्रयास होते है जो प्रशासनिक तंत्र में समयानुकूल परिवर्तनों एवं संशोधनों हेतु किये जाते है।

गेराल्ड केडन के अनुसार : प्रशासनिक सुधारों का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें प्रशासनिक व्यवस्था की कार्य कुशलता एवं गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए कृत्रिम (सुनियोजित) ढंग से अर्थात् जानबूझकर परिवर्तन किये जाते है।

प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से प्रशासनिक संरचना, संगठन प्रक्रियाओं, नियमों, कानूनों, व्यवहार, लक्ष्यों तथा कार्यशैली में परिवर्तन लाने का प्रयास किये जाते है। बहुत से विद्वान प्रशासनिक कमियों अथवा बुराइयों को दूर करने को प्रशासनिक सुधार मानते है। सामान्यतः प्रशासनिक व्यवस्थाओं की प्रमुख विशेषताओं में निर्देशित परिवर्तन लाना प्रशासनिक सुधार माने जाते है। प्रशासनिक सुधारों के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ, अभिप्रेरणा, संयम, राजनीतिक इच्छाशक्ति, वित्तीय साधनों की उपलब्धता तथा जनमत का सहयोग इत्यादि अपेक्षित है लेकिन भारत सहित अधिसंख्य विकासशील देशों में प्रशासनिक सुधारों के या तो प्रयास ही नहीं हो पाते है अथवा सुनियोजित ढंग से बाधाऐं उत्पन्न कर दी जाती है। प्रशासनिक विकास का दूसरा साधन नवाचार (Innovation) है। **थाम्पसन के अनुसार** –''नवाचार, नयें विचारों, प्रक्रियाओं और सेवाओं का आविष्कार करना, स्वीकृति प्रदान करना और उनको व्यवहार में लाना है'' यह विचार धारा अनुकूलन पर निर्भर करती है। नवाचार अर्थात् नये आचार (व्यवहार) के लिए तीन तत्त्व आवश्यक है :

(1) नई वस्तु का आविष्कार या नये विचार या विधि का जन्म हो,

(2) इसे स्वीकृति मिले।

(3) स्वीकृति के पश्चात् व्यवहार में लाया जाए।

परम्परागत समाजों तथा समस्यागत प्रशासन में नवाचारों का प्रयोग आसान नहीं है। बल्कि राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकों की अनिच्छा, सूचना एवं पहल क्षमता का अभाव, अवसरवादी स्वभाव, कठोर नौकरशाही, जनजागरूकता की कमी तथा प्रशासन का आन्तरिक पर्यावरण बाधाएँ उत्पन्न करते है।

प्रशासनिक विकास का तृतीय साधन स्वतः प्रशासनिक उद्विकास से सम्बन्धित है। अर्थात् यह प्रक्रिया बिना किसी सुनियोजित प्रयास के स्वतः चलती रहती है। समय एवं परिस्थितियों भी प्रशासन को विकसित कर देती है प्रशासन का पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण भी यही मानता है कि बाह्य वातावरण जैसे समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था तथा विज्ञान इत्यादि लोक प्रशासन को प्रभावित करते रहते है। तथा प्रशासन भी इन कारकों को प्रभावित करता रहता है। विकास प्रशासन की प्रकृति एवं आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था भी स्वतः ही विकसित हो जाती है।

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास में अन्तर :

विकास प्रशासन (प्रशासन द्वारा किये जाने वाला विकास) तथा प्रशासनिक विकास (प्रशासनिक क्षमताओं में वृद्धि) परस्पर अन्तः सम्बन्धित अवधारणाऐं है। विकास प्रशासन, सामाजिक आर्थिक उन्नति, नियोजित परिवर्तन तथा जनकल्याण के लिए निर्मित नीतियों तथा परियोजनाओं का संचालन एवं नियंत्रणकर्त्ता अभिकरण है। वर्तमान में विकास कार्यक्रमों का प्रारूप नियोजित प्रणाली पर तैयार होता है, तथा निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विशिष्ट क्षेत्रों की परियोजनाएँ निर्मित की जाती है। इसलिए कहा जाता है कि विकासशील राष्ट्रों में परियोजना प्रशासन ही विकास प्रशासन है। यद्यपि विकास प्रशासन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा बहुआयामी है। तथापि विकास कार्यों तथा सामाजिक – आर्थिक परिवर्तन के कार्यक्रमों के संचालन से सम्बन्धित प्रशासनिक व्यवस्था विकास प्रशासन का पर्याय बन चुकी है। जहां तक प्रशासनिक विकास का सम्बन्ध है यह विकास प्रशासन का एक भाग या पूर्व शर्त है। विकास प्रशासन उसी स्थिति में सफलता पूर्वक कार्य कर सकता है, जबकि उसमें विकास कार्यों को सफलता पूर्वक , सम्पादित करने की प्रशासनिक क्षमता तथा योग्यता हो। इसलिए विकास कार्यों में संलग्न प्रशासनिक संगठनों, अभिकरणों तथा कार्मिकों को विकास प्रशासन की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करना ही प्रशासनिक विकास है। प्रशासनिक कार्यकुशलता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि करके ही प्रशासनिक विकास का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

विकास प्रशासन	प्रशासनिक विकास
1. देश के सामाजिक – आर्थिक विकास एवं उन्नति के लक्ष्यों की प्राप्ति में संलग्न प्रशासनिक व्यवस्था, विकास प्रशासन है।	1.देश के सामाजिक –आर्थिक विकास तथा उन्नति के लक्ष्यों के लिए प्रशासनिक व्यवस्था को सक्षम बनाना तथा उनमें समयानुकूल परिर्वतन लाना प्रशासनिक विकास है।
2. लोक कल्याणकारी राज्य के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकास प्रशासन आवश्यक है।	2. विकास प्रशासन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रशासनिक विकास आवश्यक है।
3.यह एक व्यापक प्रशासनिक क्षेत्र का भाग है।	3. यह इस व्यापक प्रशासनिक क्षेत्र का छोटा पक्ष या उसकी आंतरिक गतिविधि है।
4.विकास प्रशासन, प्रशासनिक विकास को आधार प्रदान	4. प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन की सफलता का आधार बनता करता है।
5..यह प्रशासन के द्वारा विकास करना है।	5. यह प्रशासन का विकास है।
6.विकास प्रशासन सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक इत्यादि कई आयामों से सम्बद्ध है।	6. प्रशासनिक विकास स्वयं विकास प्रशासन का एक भाग है।

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के मध्य अन्तरसम्बन्ध :

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के मध्य धनिष्ठ सम्बन्ध है। कार्यात्मक आधार पर विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के क्रम में रिग्ज़ का मानना है कि इन दोनों पक्षों की परस्पर सम्बद्धता में अण्ड़े और मुर्गी जैसा कार्य–कारण भाव है सामान्य रूप से प्रशासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन पर्यावरणीय आयामों में परिवर्तन के बिना नहीं लाये जा सकते हैं और इसी प्रकार पर्यावरण तब तक परिवर्तित नहीं हो सकता है जब तक कि विकास कार्यक्रमों के प्रशासन को सुदृढ़ एवं कुशल नहीं बनाया जाता है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है लेकिन यह कई पक्षों की गति से प्रभावित है। विकास प्रशासन समाज के कल्याण, विकास तथा सुरक्षा हेतु परिवर्तन के प्रयास करता है किन्तु परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को सक्षम सिद्ध करने के लिए स्वाभाविक रूप से प्रशासनिक विकास अनिवार्य हो जाता है। कार्योन्मुख तथा लक्ष्योमुख प्रशासन प्रणाली से युक्त विकास प्रशासन, प्रगतिशील राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक लक्ष्यों की उपलब्धि की और प्रशासनिक संगठनों के मार्ग दर्शन की प्रक्रिया का रूप धारण कर लेता है। मार्ग दर्शन करने से पूर्व यह स्वाभाविक रूप से आवश्यक है कि यह स्वयं को सक्षम व योग्य सिद्ध हो अन्यथा असफलता का सारा दायित्व मार्गदर्शक का ही होगा । यदि विकास प्रशासन योजनाबद्ध परिवर्तन का प्रशासन है तो यह भी आवश्यक है कि वह योजना निर्माण तथा क्रियान्वयन के सभी पक्षों बाधाओं, समस्याओं तथा संभावित संकटों से परिचित हों। इसलिए यह प्रयास किया जाता है कि विकास प्रशासन की प्रक्रिया में प्रशासनिक विकास भी साथ–साथ होता रहे। भारत सहित अधिकांश विकासशील राष्ट्रों में अभी तक पूरी तरह से यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि विकास प्रशासन की गति तथा प्रशासनिक विकास की गति में पूर्ण सामंजस्य किस प्रकार स्थापित हो । बहुत से आलोचक यह मानते है कि विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास पूर्णतया दो पृथक अवधारणाएं है जिन्हें परस्पर एकता के आधार पर विश्लेषित न किया जाए किन्तु वास्तविकता यही है कि तीसरी दुनिया के देशों में इन दोनों अवधारणाओं को पृथक करना सहजता से सभंव नहीं है इस सन्दर्भ में फ्रेड़ रिग्ज़ का कथन कि विकास प्रशासन एवं प्रशासनिक विकास के मुर्गी एवं अण्डे वाला सम्बन्ध सही प्रतीत होता है। नई रचना हेतु मुर्गी एवं अण्डा दोनों की आवश्यकता होती है तथा दोनों परस्पर पूरक है। क्योंकि दोनों ही एक दूसरे के कारण भी है तथा कार्य भी। इसी प्रकार विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास भी परस्पर पूरक है। फलतः विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास एक ही सिक्के के दो पहलु है, अतः दोनों की विशेषताए भी एक समान है।

प्रशासनिक विकास के साधन :

प्रशासन द्वारा निरन्तर स्वयं का विकास किया जाता है व्यवस्था के स्वास्थ्य हेतु यह कारण आवश्यक भी होता है इस हेतु प्रशासन अनेक साधनों का प्रयोग करता है इसमें प्रमुख साधन अग्रलिखित है :

1.प्रशासनिक सुधार : प्रशासन में वांछित सुधार हेतु समय–समय पर संरचनात्मक, प्रक्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक परिवर्तन किये जाते है। भारत में स्वतन्त्रता के बाद से ही सरकार निरन्तर प्रशासनिक सुधार करती आई है। इस हेतु सरकार विभिन्न समितियों, आयोग आदि का गठन करती है। भारत में लोक प्रशासन को अधिक कारगर बनाने हेतु सुझाव देने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन श्री मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में 5 जनवरी 1966 को किया गया । दूसरा प्रशासनिक सुधार आयोग 31 अगस्त 2005 को श्री वीरप्पा मोइली की अध्यक्षता में गठित किया गया । इनके द्वारा दिए गए सुझावों को स्वीकार कर प्रशासनिक तंत्र में समयानुसार अनेक सुधार किये गये है।

2. नवाचार : परम्परागत समाजों में नवाचार लाकर ही प्रशासनिक विकास किया जा सकता है। आज हमारी सरकार डिजीटल गवर्नमेंट बनती जा रही है। आज बहुत सी सुविधाए ऑन लाइन उपलब्ध है राजस्थान में आम जनता की शिकायतों के निवारण हेतु सम्पर्क समाधान पोर्टल बनाया गया है।

3. पारिस्थितिकी : प्रशासन का बाह्य वातावरण जैसे संस्कृति, मूल्य, समाज, आर्थिक विकास, राजनीतिक परिस्थितियाँ आदि प्रशासन को प्रभावित करती है। स्वयं प्रशासन भी इन कारकों को प्रभावित करता है। व्यवहार में जैसा विकास करना हो उसके अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था का विकास करना आवश्यक होता

है।

प्रशासनिक विकास की समस्याएँ : विकासशील देशों का प्रशासनिक ढंग अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त रहता है। ये समस्याए प्रशासनिक विकास की प्रभावशीलता में कमी कर देते है। प्रमुख समस्याए अग्रलिखित है :

1. **ऐतिहासिक समस्याएँ** : अधिकतर विकासशील देशों पर विकसित राष्ट्रों का आधिपत्य रहा है। जिससे इनके विकास में उपनिवेशवादी विरासतें बाधा उत्पन्न करती है।
2. **संरचनात्मक एवं संगठनात्मक समस्याएँ** : प्रत्येक देश का प्रशासन निश्चित संरचना से संचालित होता है । अनेक बार इन संरचनाओं में निहित कमजोरियाँ प्रशासनिक सक्रियता में कमी कर देती है। जैसे अनावश्यक एवं लम्बा पदसोपान होने से निर्णय होने में विलम्ब उत्पन्न होता है।
3. **भ्रश्टाचार की समस्या** : विकासशील देश इस समस्या से अत्यधिक ग्रस्त है। इसमें भाई–भतीजावाद, पक्षपात, रिश्वत, नैतिक मूल्यों में कमी आदि है।
4. **अनाव□यक राजनीतिक दखलंदाजी** : विकासशील देशों में राजनीतिज्ञों द्वारा बार–बार प्रशासनिक तंत्र में दखल दिया जाता है जिससे प्रशासनिक तंत्र में कमजोरियाँ आती है।

उपर्युक्त के अलावा परिचालनात्मक समस्याएं, कार्मिक प्रशासन सम्बन्धी समस्याएं, प्रक्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक समस्याऐं आदि प्रमुख समस्याएं है।

निष्कर्ष : आज प्रशासनिक विकास की उपादेयता दिन–प्रति दिन बढ़ती जा रही है वर्तमान युग तकनीकी युग है जिसमें प्रशासन का भी आधुनिकीकरण अनिवार्य है सुशासन एवं विधि के शासन की स्थापना प्रशासनिक विकास के माध्यम से ही सम्भव है। आज प्रशासनिक विकास के समक्ष अनेक चुनौतियाँ है यथा –

1. प्रशासन पर गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी हेतु बढ़ता दबाव ।
2. सरकार का बढ़ता आकार।
3. सूचना एवं संचार क्रान्ति के परिवर्तनों को शीघ्र अंगीकार करने का सामर्थ्य विकसित करना। आज सरकार के समक्ष ऐसे विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन का विकास करने की चुनौती है जिनसे नागरिकों को घर बैठे सही एवं शीघ्र सेवा प्राप्त हो सके। भारत में शासन में डिजीटल क्रान्ति की शुरूआत हो गई है। आज सरकार के अधिकतर विभाग तथा संस्थाएं न केवल इन्टरनेट पर उपलब्ध है वरन् अब ये फेसबुक, ट्विट्र आदि सोशल साइट्स पर भी उपलब्ध है। ऑनलाइन वित्तीय लेन–देन हेतु भारत सरकार ने भीम एप्लीकेशन का विकास किया है।
4. नियोजन, समन्वय, नियन्त्रण, पर्यवेक्षण, विकेन्द्रीकरण की निरन्तर बढ़ती आवश्यकता।
5. मानव विकास सूचकांक में उच्च स्थान हासिल करने की चुनौती, सामाजिक न्याय की स्थापना तथा कमजोर वर्ग एवं दिव्यागों (निशक्तजन) हेतु लागू प्रावधानों को बेहतर ढंग से क्रियान्वयन करने की चुनौती।
6. आज आर्थिक समस्याएं प्रशासन की भी समस्याए है। अतः जब तक देश में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि सामाजिक तंत्र का ढ़ाचा कमजोर रहेगा, तब तक सुदृढ प्रशासनिक विकास की महत्ता बनी रहेगी ।
7. निरन्तर प्रशासनिक सुधार की चुनौती।
8. प्रशासन को परिवर्तन अभिमुख एवं विकास अभिमुख बनाने की चुनौती।

उपर्युक्त चुनौतियों के बावजूद प्रशासनिक तंत्र निरन्तर विकास प्रशासन में भागीदारी का निर्वहन कर रहा है। लोक नीतियों का व्यवस्थित ढंग से क्रियान्वयन प्रशासनिक विकास द्वारा ही सम्भव है । समावेशी एवं सतत् विकास (Inclusive & Sustainable Development) को साकार करने हेतु सुदृढ़ प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता है। जिसके लिए प्रशासनिक विकास अनिवार्य है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. विकास प्रशासन हेतु प्रशासनिक विकास अनिवार्य है।
2. प्रशासनिक विकास में प्रशासनिक तंत्र की क्षमताओं को सुदृढ़ करना शामिल है।
3. जिन देशों में अभी पिछड़ापन है वहाँ विकास प्रशासन व प्रशासनिक विकास दोनों की आवश्यकता है।
4. प्रशासनिक विकास प्रशासन की कुशलता एवं क्षमता में वृद्धि करना है।
5. भारत में प्रशासनिक विकास हेतु अभी तक अनेक समीतियों एवं आयोगों का गठन किया गया है। इनमें प्रथम एवं द्वितीय
   प्रशासनिक सुधार आयोग प्रमुख है।
6. विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास में पारस्परिक सम्बन्ध को मुर्गी एवं अण्डें का सम्बन्ध फ्रेड रिग्ज़ ने कहा हैं।
7. भीम वित्तीय लेन–देन हेतु विकसित सरकारी मोबाइल एप्लीकेशन है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न :

1. प्रशासनिक विकास की तुलना मुख्यतः किससे की जाती है ?
(अ) परम्परागत प्रशासन से (ब) विकास प्रशासन से
(स) राज्य प्रशासन से (द) राष्ट्रीय प्रशासन से

2. प्रशासनिक विकास का मुख्य उद्देय है –
(अ) सामर्थ्य व दक्षता बढ़ाना
(ब) प्रशासनिक तंत्र का विस्तार
(स) कार्यक्षेत्र बढ़ाना
(द) उपयुक्त में से कोई नहीं

3 प्रशासनिक विकास तथा विकास प्रशासन में मुर्गी व अण्डे का सम्बन्ध किसने बनाया है ?
(अ) फेयोल (ब) रिग्ज़
(स) फैरल हैडी (द) साइमन

4. प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन कब हुआ था?
(अ) 1960 (ब) 1966
(स) 1970 (द) 1976

5. निम्नलिखित में कौन से प्रशासनिक विकास के साधन हैं।
(अ) प्रशासनिक सुधार (ब) नवाचार
(स) वेबसाइट (द) उपर्युक्त सभी

6. सरकार के जनता से जुड़ाव के नवीन साधन है।
(अ) फेसबुक (ब) टिवट्र
(स) वेबसाइट (द) उपर्युक्त सभी

7. सम्पर्क समाधान पोर्टल माध्यम है ?
(अ) विवाह पंजीकरण
(ब) स्वास्थय विभाग के आँकड़े
(स) नागरिक शिकायत निवारण
(द) विदेशी पर्यटकों की समस्या का समाधान।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. प्रशासनिक विकास का अर्थ समझाइये।
2. विकास प्रशासन का अर्थ लिखिए।
3. प्रशासनिक विकास के प्रमुख साधन क्या है ?
4. प्रशासनिक विकास की कोई दो चुनौतियाँ लिखिए।
5. सम्पर्क समाधान पोर्टल क्या हैं ?
6. भीम एप्लीकेशन क्या है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. प्रशासनिक विकास का अर्थ व परिभाषा लिखिए।
2. प्रशासनिक विकास की आवश्यकता समझाइये।
3. फ्रेड रिग्ज का अण्ड़ा व मुर्गी सम्बन्ध क्या हैं ?
4. प्रशासनिक विकास व प्रशासनिक सुधार में सम्बन्ध बताइये।
5. प्रशासनिक विकास की समस्याएँ लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न :

1. प्रशासनिक विकास का अर्थ, परिभाषा एवं आवश्यकता पर लेख लिखिए।
2. विकास प्रशासन एवं प्रशासनिक विकास के पारस्परिक सम्बन्धों को समझाइये।
3. प्रशासनिक विकास की प्रमुख समस्याओं को समझाइये।
4. प्रशासनिक विकास के साधनों को स्पष्ट करते हुए इसकी चुनौतियों पर लेख लिखिए।

उत्तरमाला –

1. (ब) 2.(अ) 3. (ब) 4. (ब)
5. (द) 6.(द) 7. (स)